International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 15-11-2021, Accepted: 30-11-2021, Published: 16-12-2021
Volume 7, Issue 6, 2021, Page No. 65-66

बालकों के शैक्षिक जीवन पर वर्तमान में मीडिया के प्रभाव

डॉ0 सरिता वर्मा[1], अंजली मिश्रा[2]

[1] विभागाध्यक्षा, महिला महाविद्यालय, किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] शोध छात्रा, नॉर्थ ईस्ट फ्रन्टियर टेक्निकल विश्वविद्यालय, एलो, वेस्ट साइंग, अरूणाचल प्रदेश, भारत

सारांश

सर्वाधिक बालक नेशनल जियोग्राफिक चैनल पसन्द करते हैं। 20% स्टार प्लस 10–10% बच्चे कार्टून तथा डिजनी तथा 6-67% जी0टी0वी0 तथा कलर्स चैनल पसन्द करते हैं। सर्वाधिक 60% बालक संगीत के कार्यक्रम 30% विज्ञान आधारित तथा 10% बालक फिल्में देखना पसन्द करते हैं। नाटक, समाचार, आध्यात्मिक कार्यक्रम बच्चे पसन्द नहीं करते। सर्वाधिक 79-67% बच्चे बदलाव नहीं चाहते 20-33% बच्चे बदलाव चाहते हैं। 60% बालक समाचारों से संतुष्ट हैं, 37-67% बच्चे बहुत कम संतुश्ट तथा सबसे कम 2.33ः बच्चे बिल्कुल भी संतुश्ट नहीं हैं। सर्वाधिक 38-33% अपराधिक, 30% फिल्में, 15-67% सूचकांक, 11-67% सामाजिक तथा सबसे कम 4-33 षोध समाचार बच्चों को प्रभावित करते हैं। बच्चों पर सर्वाधिक सामाजिक और मनोरंजनात्मक फिल्में (35%-35%), 20% आपराधिक 9% नैतिक तथा सबसे कम 1% धार्मिक फिल्में अपना प्रभाव छोड़ती हैं। 100% बच्चे कम्प्यूटर को अच्छा साधन मानते हैं।

मूल शब्दः मनोरंजनात्मक, अपराधिक, सूचकांक, धार्मिक, आध्यात्मिक, संतुष्ट

प्रस्तावना

बाल्यावस्था एक महत्त्वपूर्ण अवस्था है वैसे तो मानव के जीवन में सभी अवस्थाओं का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, लेकिन बाल्यावस्था की अवस्था पर बालक की अभिवृत्तियों एवं व्यवहार पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है जबकि कुछ अवस्थाऐं महत्त्वपूर्ण होती हैं और इसका प्रभाव जीवन पर लम्बे समय तक पड़ता है। उनमें से एक बाल्यावस्था भी है जिसमें षारीरिक एवं मानसिक प्रभाव के अतिमहत्त्वपूर्ण होते हैं।

बाल्यावस्था बहुत ही अस्पष्ट होती है उसमें जिस भूमिका की उपेक्षाएँ की जाती हैं उसके प्रति उसमें भ्रम होता है। जब बालक समान व्यवहार करता है तो उससे कहा जाता है कि अपनी आयु के अनुसार कार्य करो, यदि बालक बड़े बालकों की भांति व्यवहार करने का प्रयास करता है तो कहा जाता है कि बड़े बनने की कोशिश मत करो, इस प्रकार इन्हें बड़ों की तरह व्यवहार करने से रोक दिया जाता है। दूसरी ओर बाल्यावस्था की यह अस्पष्ट स्थिति उनके लिए लाभदायक भी होती है। ये विभिन्न प्रकार की जीवनशैली को अपनाने का प्रयास करते हैं उनके आवश्यकताओं की पूर्ति उत्तम तरीके से पूर्ण करने के लिए व्यवहार के ढंग मूल तथा अभिवृत्तियाँ निश्चित कर पाते हैं। बाल्यावस्था के दौरान बालक के व्यवहार में परिवर्तन की दर शारीरिक परिवर्तन की दर के समान्तर होती है। जैसे ही बालक में परिवर्तन कम होने लगते हैं वैसे ही व्यवहार में परिवर्तन भी धीमे हो जाते हैं।

बाल्यावस्था में बालक का जीवन बहुत अस्त व्यस्त हो जाता है। फलस्वरूप वह वातावरण से समायोजन करने के लिए वह अपने आप को किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की भाँति अपने को बनाना चाहता है। चाहें फिल्म, नाटक अथवा उपन्यास के नायक–नायिका या कोई राजनेता एवं लोकप्रिय व्यक्ति को अपना आदर्श समझकर उसकी नकल करने लगता है तथा उसी के समान खान–पान, रहन–सहन, पहनावा आदि चीजें अपना लेता है।

बाल्यावस्था एक निश्चित प्रतिमान होता है अतः उनमें एक निश्चित आयु स्तर पर उस आयु की विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। बाल्यावस्था के विकास के साथ–साथ उनमें कई प्रकार के विकास की गति तीव्र होती है। बाल्यावस्था के अन्त तक उनमें शारीरिक परिवर्तन होने शुरू हो जाते हैं। इस अवस्था में परिवार सम्बन्धी परिवर्तन तथा विकास अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं। बालक अपनी नई स्थिति के समायोजन के लिए प्रयत्नशील होता है। बाल्यावस्था में समायोजन सम्बन्धी अस्थिरता के लिए प्रयत्नशील होता है और संवेगात्मक अस्थिरता अधिक मात्रा में पायी जाती है। इस अवस्था में बालक के जितने मित्र होते हैं उतनी किसी अन्य विकास की अवस्था में नही होते हैं। बाल्यावस्था में मित्र वृत्त एवं सामाजिक मित्र वृत्त बहुत विस्तृत होता है। इनकी मित्रता जाति, धर्म, रंग तथा सामाजिक, आर्थिक स्तर आदि सम्बन्धी भेदभाव से परे होती है। इनकी मित्रता में सहयोग और सहानुभूति पर्याप्त मात्रा में परिलक्षित होती है। बाल्यावस्था उमंगपूर्ण अवस्था होती है।

एन. झा के शब्दों में "बालक में अपने मन तरंगी कल्पना क्रिया की पर्याप्त समृद्धि होती है"।

बाल्यावस्था एक सुखदायी अवस्था है प्रायः देखा जाता है कि बाल्यावस्था अपनी समस्याओं का समाधान इसलिए अधिक सरलता से कर लेता है कि उसको परिवार से बहुत सहायता मिलती है। लेकिन किशोरावस्था में उसे इस प्रकार की सहायता प्राप्त नहीं हो पाती इसलिए व्यवस्था दुखदायी हो जाती है। जैसे सामाजिक दबाव, समायोजन सम्बन्धी समस्यायें, प्रतिष्ठा का आधार, आदर्शवाद अनुपयुक्त की भावनाएँ। बालक अपने जीवन के अस्थिरता को समाप्त करने के लिए एवं कठिनाइयों एवं समस्याओं को समाप्त करने के लिए तथा वातावरण से समायोजन करने के लिए धर्म के प्रति श्रद्धा होने लगती है।

महत्व

आज राष्ट्र को विकास की राह पर पहुँचाने में बच्चों का योगदान पूरी दुनियाँ के लिए मिसाल बन चुका है। भारतीय बच्चों ने देश दुनियाँ के सभी कोनों में अपना अलग–अलग स्थान बनाया है तथा सम्मानित किया गया है। अतः राष्ट्र के प्रगति के पथ पर बनाये रखने के लिए बच्चों का विकास करना, समय की माँग है। अपना देश सच्चे अर्थों में समद्ध व स्वस्थ तभी हो सकता है, जब

इसकी इकाई बालक–बालिकाओं ही सक्षम व स्वस्थ्य होगी। अतः बाल विकास राष्ट्र की एक महत्त्वपूर्ण माँग बन चुकी है।
जिनका सर्वांगीण विकास संसाधनों के आभाव से नहीं हो पाता है। यदि हम विकसित राष्ट्र की कल्पना करें तो उसक लिए हमें समग्र रूप से मुख्यतः विद्यालय जाने वाले बच्चों व शैक्षिक स्तर को बढ़ाने में अलग–अलग रूप से मीडिया के प्रभावों का अध्ययन करना होगा। बाल विकास के अध्ययन द्वारा हमें पता चलता है कि असभ्य एवं प्रगतिशील राष्ट्रों में बालकों के समुचित विकास के लिए क्या–क्या किया जा रहा है और उनमें से किन–किन बातों को हम अपने देश में अपना सकते हैं। इस प्रकार बाल–विकास के अध्ययन द्वारा बालकों तथा बालिकाओं को सुयोग्य बनाया जा सकता है।

उद्देश्य

- विकास स्तर पर बच्चों को उनके अधिकारों से अवगत कराना एवं उनमें उन अधिकारों के प्रति जागरूकता लाना।
- विकास के स्तर पर शैक्षिक व मीडिया द्वारा बच्चों के परिवार मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभावी की जानकारी करना।
- बच्चों के विकास के स्तर पर उपलब्ध शैक्षिक व मीडिया के प्रति बच्चों के व्यवहार का अध्ययन करना।
- विकास के स्तर पर शिक्षा एवं मीडिया के विकास कार्यों हेतु जनसम्पर्क करना तथा उचित परामर्श देना।
- हमें बालकों के सम्बन्ध में पूरी–पूरी जानकारी प्राप्त हो जाती है और इस जानकारी का उपयोग बाल विकास में किया जाता है।
- बच्चों का शैक्षिक पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक स्तर ज्ञान करना।
- बालकों के सन्तुलित विकास के स्तर द्वारा सहन की जाने वाली समस्याओं का पता लगाना।

तालिका 1: विद्यालय में टी0वी0 कार्यक्रम के विशय में बातें करने के आधार पर

	इकाइयाँ	प्रतिशत
बहुत ज्यादा	60	20%
बिल्कुल नहीं	20	6-67%
थोड़ा बहुत	220	73-33%
योग	300	100%

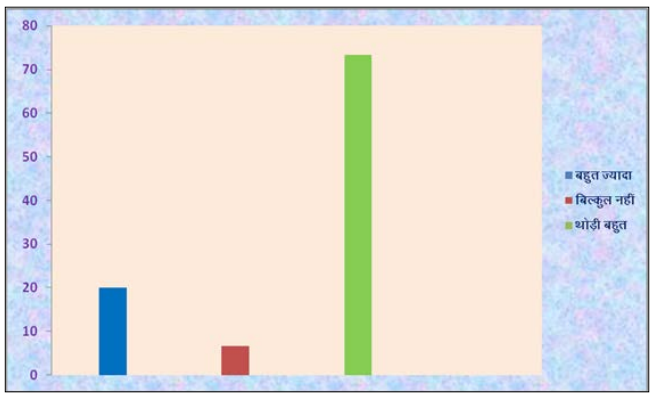

चित्र 1

सन्दर्भ सूची

1. Friedrich K, Stein AH. Prosocial television Young Children: the effect of verbal labeling and role playing on learning and behaviour child development, 1979.
2. Gupta A. “Impact of watching television on school going children, M.Sc. (Home Science) dissertation submitted to Agra University, Agra, 1996.
3. Hearold S. “A Synthesis of the effects of television on social behaviour.” In G. Comstock (ed); Public Communication and Behaviour, Vol. 1, New York: Academic Press, 1986.
4. Himmeleweit HT, Oppenheim AN, Vincy P. television and the children: An empirical study of the effect of the television on the yang. Nuffiled Foundation with Oxforx University Press, London, 1954.
5. Keval J Kumar. “Mass Communication in India” Published by: Ashwin, J. Shah, Jaico Publishing House 121, M.G. Road, Mumbai, Revised Edition, 1989, 20.